भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष-2, अंक-9	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-20.00
मंगलवार, 12 सित. ' 79	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 2.00

कृपावतार स्वामिश्री सहजानंदजी

अक्षरधाम की अनुपम अनुकृतियां।

आपने कभी गुजरात के स्वामिनारायण मंदिर के दर्शन किये हैं? यदि किये होंगे तो निश्चित मुग्ध हो गये होंगे। सामान्य मंदिरों से ये विशिष्ट होते है। इन विशिष्टताओं में प्रमुख है इनकी भव्यता, प्रांगण की विशालता, बेनमून कलाकारिता, धर्मप्राण वातावरण और सबसे अधिक अनेक संतों और हरिभक्तों की भीड़ के मध्य एकांत की प्रभुता की शान्ति की अद्भुत अनुभूति। लगता है कि यहां सब सन्तों के साथ भगवान स्वामिनारायण नित्य बिराजमान है। स्वामिनारायण के मन्दिर अक्षरधाम की अनुपम अनुकृतियां है। पार्थिव जगत के मध्य-अपार्थिव तत्त्व यहां उजागर हुआ है। यहां त्याग की शान्ति है किन्तु यह जड़ नहीं है। रसिकवर श्रीहरि की ब्रह्मानंद प्रदायिनी रसिकता यहां निरन्तर रममाण है। यहां निर्मल चिदाकाश की स्वच्छता है। यहां कैलास की शीतलता है, बैकुंठ की समृद्धि है और ब्रह्म लोक की सात्त्विक द्युति है। यहां परमात्मा, अक्षर, संत और हरि भक्त सब एकमय हो गये हैं। यहां प्रसाद है। यहां तृप्ति है, यहां सूख है, यहां चिरंतन शान्ति सतत निवास कर रही है। स्वामिनारायण के मंदिर अर्थात् भूलोक के अमृतकुम्भ ! यहां भगवान यजमान है और हम अतिथि है। यहां भगवान दाता है और हम दान लेनेवाले हैं। यहां प्रवेश करते ही चिरन्तन शान्ति प्राप्त होती है। केवल प्रवेश कीजिए, एक क्षण में संसार छूट जायेगा और स्वाभाविक समाधि लग जायेगी। एक लेखक ने इन मंदिरों के बारे में लिखा है:

'ये मंदिर श्रीजी महाराज की विशिष्ट प्रतिभा का निदर्शन है। बीच में कुछ एक शताब्दियाँ ऐसी बीत गई कि हमारे यहां शिखर बद्ध मन्दिरों की रचना ही रुक गई थी। यकायक महाराज ने ऐसी दिव्य फूंक लगाई कि जैसे पाताल से प्रगट होते ही वैसे गगन चुम्बी शिखर युक्त भव्य मन्दिर गुजरात की धरती पे भक्ति और शरणागति का ध्वज लहराते हुए प्रगट होने लगे। यह महान दैवी प्रक्रिया आज भी विद्यमान है और गुजरात की सीमा पार करके भारत की भी सीमा पार करके-

सात समंदर और तेरह नदियां पार करके आज पृथ्वी पर स्वामिनारायण भगवान के शिखर युक्त मंदिरों की हारमाला की रचना हो रही है।'

धर्मचक्र परिवर्तन का एक अध्याय।

वास्तव में मन्दिर रचना महाराज के धर्म चक्र परिवर्तन का ही एक अध्याय है। समाधि, अहिंसक यज्ञों की प्रवृत्ति, संत मंडली, हरिभक्तों का समाज आदि के बारे में हम पढ़ चुके हैं। धार्मिक मेले (जिनको स्वामिनारायण सम्प्रदाय में 'समैया' कहते हैं) में सम्प्रदाय के रहस्यों की विचारणा होती थी, प्रकरण परिवर्तित होते थे, संतों के विचरण और धर्मप्रचार की व्यवस्था होती थी, ज्ञान संगोष्ठियां होती थी, उत्सव, भजन, भोजन आदि कार्यक्रम होते थे, परस्पर के सुख-दुख की कथाएं होती थी, संगीत सभाएं होती थी, धार्मिक कला की प्रदर्शनी होती थी और कुस्ती के खेल भी किये जाते थे और इस प्रकार महाराज स्वामिनारायण धर्म का संगठन सुव्यवस्थित और सुचारु रूप से करते थे। किन्तु अब आवश्यकता थी स्थायी स्थानों की जिनके प्रभाव से संतों और हरिभक्तों का समन्वय होता चले और प्रजा को सतत धर्म लाभ मिलता रहें। अतः मन्दिर की रचना क्रियान्वित करने का समय आ गया था।

प्रथम स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में

इतने में अर्थात् सं. 1876 के कार्तिक कृष्ण में जब श्रीजी महाराज वरताल होकर अहमदाबाद आयें तब उस समय के वहां के जिल्ला कलक्टर डनलोप साहब ने अपने आप श्रीजी महाराज को कहाः

''स्वामिनारायण भगवान, ऐसे बड़े शहरों में आपके मठ क्यों नहीं है? आप कृपा करके आपका स्थानक यहां बनाईए। आपका मठ और मन्दिर यहां बनाईए ताकि आपके साधु और सत्संगी आनंद से यहां रह सके, उत्सव और समैया हो सके। आप जितनी चाहो इतनी जमीन मैं अहमदाबाद में दे दूंगा।''

यह सुनकर महाराज ने निर्णय किया और अहमदाबाद के नवावास में पाठक बाड़ी नामक स्थल चुना और कहा, ''यदि यह स्थान प्राप्त हो तो हम यहां मन्दिर का निर्माण करेंगे और नर नारायण देव की स्थापना करेंगे।'' डनलोप साहब ने शीघ्र ही इसका स्वीकार कियाऔर ताम्रपत्र पर खत करके वह स्थान सदा काल के लिये स्वामिनारायण भगवान को समर्पित कर दिया।

अल्प समय में ही महाराज ने वहां साधुओं के निवास के लिये धर्मशाला बनवाई और घोषित किया कि यहां शिखरबद्ध स्वामिनारायण मन्दिर की रचना होगी और इसमें नरनारायण देव बिराजमान होंगे। इतना ही नहीं, महाराज ने पू. आनन्दस्वामी को आज्ञा दी कि वे मन्दिर का कार्य प्रारंभ करें।

नरनारायण देव का प्रतिष्ठा महोत्सव

इस प्रकार महाराज के संकल्प और पू. आनन्दस्वामी के पुरुषार्थ से कुछ समय में ही अहमदाबाद में शिखर युक्त भव्य मन्दिर खड़ा हो गया। जब मन्दिर अस्तित्व में आ गया तब आनन्दस्वामी ने महाराज को पत्र लिखा। महाराज ने पत्र पढ़ कर आनन्द प्रदर्शित किया और सारे गुजरात के शहरों में, नगरों में, ग्रामों में और कस्बे में जहां जहां हरिभक्त निवास करते थे वहां मंगल पत्रिका भेजी और सबका अमदाबाद में आकर मन्दिर के उद्घाटन और नरनारायण देव के प्रतिष्ठा महोत्सव में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया। महाराज स्वयं अपने अगणित शिष्य-प्रशिषय, संतों और हरिभक्तों को साथ लेकर

अहमदाबाद पहुँचे। तब अहमदाबाद नगर के नागरिकों ने महाराज का भव्य स्वागत किया। शानदार जुलूस निकला और सारी प्रजा ने श्रीजी महाराज का स्वागत किया। बाद में संवत् 1878 के फाल्गुन शुक्ल तृतीया के दिन एक भव्य समारोह में महाराज ने वेदोक्त विधि से अहमदाबाद के स्वामिनारायण मन्दिर में नरनारायण देव की मूर्ति प्रतिष्ठा की ! प्रतिष्ठाविधि, पूजनविधि और आरती के बाद महाराज ने आज्ञा दीः

''भविष्य में इसके दोनों ओर शिखरबद्ध मंदिर बनाना। इस प्रकार यह मन्दिर तीन शिखर वाला होगा। मध्य में आज हमने नरनारायण देव को स्थापना की है भविष्य में बांई ओर से मन्दिर में राधाकृष्ण की स्थापना करना और दांई ओर धर्म भक्ति (महाराज के माता-पिता) और हमारी मूर्ति की स्थापना करना।'' आज ऐसा ही मन्दिर अहमदाबाद को मध्य में-अहमदाबाद के हृदय में स्थित है। तीन शिखर युक्त मन्दिर, विशाल प्रांगण, भव्य सभामंडप और तीमंजिले साधु निवासस्थान प्रत्येक यात्री का मनहरण करते हैं।

इस प्रकार श्रीजी महाराज ने प्रथम स्वामिनारायण मन्दिर अहमदाबाद में बनवाया। एक अद्‌भुत आश्चर्य यह है कि थोड़े ही वर्ष पूर्व मराठा के पेशवा ने महाराज को जिस अहमदाबाद से निशकासित किया था और 'यहां आपका पांव भी मत रखना' ऐसा हुक्म दिया था, उसी अहमदाबाद में थोड़े ही समय में मन्दिर के रूप में महाराज ने अपना स्थान जमा दिया और हुक्म करने वाले पेशवा की ही टांग अहमदाबाद से कट गई, क्योंकि अंग्रेजी सत्ता यहां स्थापित हो चुकी थी। महाराज की क्रान्तिकारक समाज सेवा, धर्मसेवा और महाराज के माध्यम से सदाचार जिस प्रकार बढ़ रहा था-ये सारी बात अंग्रेज अफसर स्पष्ट देख चुके थे। इतना ही नहीं, इसके लिये वे बारबार महाराज की प्रशंसा भी करते रहते थे। परिणाम रूप अहमदाबाद का प्रथम स्वामिनारायण मन्दिर !

ब्राह्मण भोजन और लालदास सेठ

इस समय की एक घटना पाठकों के लिए अत्यंत रोचक होगी। मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा हो गई तब महाराज को संकल्प हुआ कि इस निमित्त अहमदाबाद में जितने ब्राह्मण है इन सबको भोजन करवाना चाहिए। इतना विशाल नगर और इसमें रहने वाले हजारों की संख्या के ब्राह्मण ! यह कैसे हो सकता है? खर्च का अंदाज निकला सात हजार रुपए! उस जमाने के सात हजार रुपए!! कौन उधार दे सकता है? व्यापारी को तो कोई भी उधार देगा, साधु को कौन देगा? किसी हरिभक्त ने कहा कि यह लालदास गोरा दे सकता है। महाराज ने लालदास सेठ को बुलाया और अत्यंत प्रेम से कहाः

''लालदास जो, यहाँ हमने देवों की प्रतिष्ठा तो की, अब हमारी इच्छा ब्रह्मभोजन कराके ब्राह्मणों को लड्डु खिला कर संतृप्त करने की है । सात हजार रुपये उधार चाहिए।'' लालदास ने सोचा कि सात हजार रुपये तो मैं दे सकता हूं , किन्तु इन रुपये के लड्डू हो जायेंगे। इन लड्डू के फिर रुपये कैसे होंगे और महाराज मुझे रुपये कैसे वापस दे सकते हैं?

इस प्रकार सोचकर इन्होंने महाराज को उत्तर दियाः

''महाराज ! रुपये तो है, किन्तु इसके लिये मुझे मेरी घरवाली को पूछना होगा।''

महाराज ने कहाः

''ठीक है। पूछ लीजिए।'' लालदास सेठ जब अपने घर गये तब पत्नी ने कहा, ''क्या करके

आये?'' सेठ ने सारी बात कह दी। पूर्व जन्म के संस्कार युक्त पत्नी ने कहाः

''मुझे पूछने की आवश्यकता है'' ऐसा आपने महाराज को क्यों कहा? रुपये तो उन्हीं के हैं और वे ही मांगते हैं, दे दो। संपत्ति आज है, कल नहीं भी हो सकती, दे दो। ऐसा सद्भाग्य बारबार नहीं आता है।''

शीघ्र ही लालदास महाराज के पास गया और सात हजार रुपये महाराज के चरणों के पास रख दिये।

महाराज ने प्रसन्न होकर ब्राह्मणों को निमंत्रण दिया। काकंरिया तालाब के पास भोजन की व्यवस्था हुई। हजारो की संख्या में ब्राह्मण आये और भोजन करके तृप्त हुए। महाराज का संकल्प सिद्ध हुआ। ब्राह्मणों के बाद संतों और हरिभक्तों ने भोजन किया और बाद में महाराज नें! उसी समय वहाँ सभा हुई।

जमा सम्पत्ति-अठन्नी !

अनेकों ने महाराज का पूजन किया और उनके श्री चरणों में भेंट के रुपये रख दिये। पूजन संपूर्ण होने के बाद कोठारी लाधा ठक्कर ने भेंट की रकम की गिनती की तो ठीक सात हजार रुपये और अतिरिक्त केवल अठन्नी ! महाराज ने तुरन्त लाधा ठक्कर को आज्ञा दी कि इसमें से सात हजार रुपये सेठ लालदास गोरा को वापस दे दीजिए। अब लालदास रुपये वापिस लेने की मना कर रहे थे। किन्तु महाराज ने रुपये आग्रह पूर्वक वापस कर ही दिये। इस प्रसंग के बाद लाधा ठक्कर ने महाराज को मजाक में कहाः

''.....और यह अठन्नी?''

महाराजः यह हमारी जमा संपत्ति।

ठक्कर : इससे वापस लौटते समय पाथेय तो (खाने का) भी नहीं बनेगा।

महाराज : अरे ! मैं साथ में हूँ फिर आप खाने की चिन्ता क्यों करते हो?

ठक्कर को अमूल्य उपदेश मिल गया।

''मैं साथ में हूं फिर चिन्ता किस बात की?''

मैं साथ में हूं।

यह तो श्रीमद् भगवद्गीता का वचनः

''अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनः पर्युपासते।।''
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।

अनन्यभाव से-एकांतिक भाव से जो मेरी उपासना करता है–नित्य मेरे साथ है उसका भार मैं स्वयं उठाता हूँ।'' निश्चित महाराज अपने जीवनप्रसंगों से, अपने जीवन के उदाहरणों से भी भक्तजनों के हृदयों पर प्रभाव डालते थे। इस प्रसंग से स्पष्ट होता है महाराज किसी महान प्रसंग से लाभ उठाते नहीं थे। प्रसंग की समाप्ति और रुपये की भी समाप्ति ! भविष्य की चिन्ता न वह करते थे न भक्तों को करने देते थे। असाधारण ईश्वर श्रद्धा के बिना इतना बड़ा त्याग नहीं हो सकता है और महाराज की इच्छा वह ही थी कि अपने भक्तजनों में यह श्रद्धा दृढ़ स्थापित हो। दूसरा ''मैं साथ में हूँ''। कितनी महती आत्मीयता ! कितना बड़ा विश्वास ! महाराज आत्मीय को अत्यधिक आत्मीय बना कर उसकी भविष्य की सारी चिन्ता नष्ट कर देते थे। यह केवल उपदेश नहीं है। ईश्वरश्रद्धा द्वारा प्राप्त निर्भीकता का महामूल्य वरदान है।

महाराज अद्भुत कल्पतरु

इस प्रसंग के संदर्भ में एक लेखक ने ठीक ही लिखा हैः

महाराज को साथ में रखो, सारी चिन्ता टल जाती है। जहां महाराज का नाम जहां महाराज का आश्रय वहां चिन्ता खड़ी ही नहीं रह सकती है। चिन्ता का वहां अस्तित्व ही नहीं है। एक महाराज

और दूसरे आप, फिर क्या चाहिए? महाराज तो कल्पतरु के भी कल्पतरु है। कल्पतरु स्वयं इच्छा नहीं कर सकता है। इसके नीचे बैठने के बाद आप संकल्प करते हो और बाद में फल प्राप्त होता है। किन्तु महाराज अद्‌भुत कल्पतरु है। आपको केवल उसकी छाया में बैठना है। आपको कुछ संकल्प भी नहीं करना है आपका सारा बोझ उसके सर पर। आपका सुख किसमें है, आपका कल्याण कैसे हो सकता है। वह आप स्वयं नहीं जानते है, वह ही जानते है। इस प्रकार की निश्चिंतता वह ही है सुख! इस प्रकार की शरणागति वह ही है कल्याण ! लाधा ठक्कर ने महाराज के शब्दों का यह मर्म समझ लिया, आत्मसात् कर लिया और उनको अपूर्व सुख का आस्वाद प्राप्त हुआ। उन्होंने समर्पण भाव से महाराज के चरणों में प्रणाम निवेदित किये। **क्रमशः**

.....विदेश में प.पू. काकाजी

नायगरा के प्रपात के समान इन दिनों में प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी विदेश में विचरण कर रहें है और कृपावतार स्वामी श्री सहजानंदस्वामी का दिव्य संदेश, दिव्य मूर्ति द्वारा स्वाभाविक प्रसृत और प्रफुल्लित हो रहा है।

अभी नायगरा प्रपात पर प.पू. काकाजी के शब्दों में "special भजन सब हरिभक्तों के लिये किया था।'' एक और नायगरा का जलप्रपात तो दूसरी और काका के प्रेम का पुनित प्रपात ! यहां से हजारों मील दूर हो किन्तु काकाजी एक एक को अत्यंत सुहृद्‌भाव से स्मृति में रखते हैं और जब भजन हो, जब महापूजा हो तब सब के श्रेय के लिये संकल्प करते हैं। नायगरा प्रपात पर सन्मुख उपस्थित सबको प.पू. काकाजी का सन्देश थाः

'नायगरा की समान निर्दोषबुद्धि से सुहृद्‌भाव के प्रपात में अखंड रहना है।' यह सुहृद्‌भाव विश्व के अनन्तकोटि जीवों को जोड़ने वाली अद्‌भुत कड़ी है। काकाजी की पत्र प्रसादी की फूल कटोरी से भी यह ही सुगन्ध उठती है।

काकाजी की जब चिट्‌ठी आती है वह चिट्ठी किसको सम्बोधित की जाती है? आपको-सबको काकाजी की फूलवाडी के हर फूल को और इसमें बात की जाती है वहां के सब की। वहां बैठे बैठे उनको आपकी चिन्ता है। वहां महापूजा में, धून्य में, संकल्प में काकाजी हमारे देश, काल, स्वभाव सब कुछ नष्ट हो अर्थात् वे हमें छुए भी नहीं इसके लिये प्रार्थना करते है। वहां जो यात्रा में सहायभूत है उन सबकी गुणगाथा भी पत्र का विषय होता है। एक शब्द में कहें तो पू.पू. काकाजी पत्रप्रसादी अर्थात् सुहृद्‌भाव की सुगन्ध !

प.पू. काकाजी की यात्रा अर्थात् सतत विचरण। यात्रा में काकाजी का दिन, रात के बारह -एक बजे समाप्त होता है। सतत समागम-सतत विचरण !

ता. 16-7-79 की चिट्‌ठी बोलती हैः

'शिकागो में गुरुपूर्णिमा का उत्सव प.भ. दिनकरभाई के वहां सुचारु रूप से मनाया गया। सब को नयी जानकारी हुई। प.भ. महेन्द्रभाई पटेल, प.भ. हसमुखभाई पटेल, प.मु. मधुबहन, प.भ. गोविन्दभाई, प.भ. सुरेशभाई शाह, प.भ. रमणभाई पटेल, प.भ. हीराभाई, पू.कमलाबा, प.भ. जगदीशभाई दोशी, कीकुभाई, भारती बहन आदि ने भी वहां अन्य सेन्टरों में सत्संग सभा का आयोजन किया था।

-असाधारण धर्मप्रसार

.....वहां सभा में हमारी ओर से धुन्य करवाना ताकि हमारा स्वास्थ्य अच्छा रहे।'

-भगवान और भक्त का सुहृद्‌भाव युक्त संबंध

.....सुना कि पू. मोरारजीभाई ने इस्तीफा दिया.....हमें तो भजन का ही बल रखना है। स्वरूपयोग सतत रखना। कर्ता-हर्ता एक प्रभु ही है। पू.बापा ही है। उनको सब में देखते रहना। 'प्रथम प्रभु' ऐसा सोचने की आदत रहेगी तो भूल नहीं होगी।

एकांतिक प्रभु निष्ठा और गुरुनिष्ठा का ही उपदेश

ता. 14-8-79 की चिट्ठी बोलती है।

.....कर्ता-हर्ता सर्वोपरि प्रगट एक महाराज ही है और जो करते होंगे वह ठीक ही करते होंगे' ऐसा दृढ़ता से मानना और सबको भजन करना सिखाना। श्रद्धा और भक्ति का उपदेश

अभी तक पू. काकाजी ने काफी यात्रा कर ली हैः शिकागो, न्यूयोर्क, न्यु जर्सी, फिलाडेल्फिया, लोस ऐन्जेलस, सान्फ्रान्सिस्को, डेनवर, डिमोइस, केनेडा, डेट्रोरेट टोरेन्टो आदि अनेक स्थलों में हरिभक्तों को परम आश्वस्त किये है। अमेरिकन साधकों ने भी श्री जितुभाई के वहां प.पू. काकाजी का कृपाप्रसाद प्राप्त किया है।

बर्कली युनिवर्सिटी, Kundalini Institute, Toronto Cancer Research Institute आदि में अच्छी सभा हुई और हमारे तान्त्र, योग और आयुर्वेद में लोगों की श्रद्धा काकाजी ने बढ़ाई है। अभी विचरण सतत चल ही रहा है। प.भ.रमेशभाई सोनी के पत्रानुसार ता. 26 को शिकागो के फ्रान्सिस होल में प.पू. काकाजी का अमेरिका से 'विदाय समारंभ' और yoga and science पर प्रवचन हुआ।

शिकागो के इस विदाय समारोह में उपस्थित अमेरिकी प्रजाजनों को प.पू. काकाजी के स्वरूप में अतिशय गाढ श्वेत प्रकाश से भरपूर तेजस्वी दिव्यमूर्ति का दर्शन हुआ। परिणामस्वरूप प.पू. काकाजी की ओर वे चिकित्सक अर्थात् परीक्षक दृष्टि से देखते थे यह दृष्टि ही शून्य हो गई और उनका हृदय भावपूर्वक प.पू. काकाजी के चरणों में झुक गया।

प.पू. काकाजी लिखते है-'यहां अत्यधिक उत्साह है।' प.पू. काकाजी की यात्रा असाधारण सुविधा से हो रही है और उसका श्रेय है शिकागो के-प.भ. दिनकरभाई, सुरेश भाई शाह, महेन्द्रभाई एम पटेल, हसमुख भाई पटेल, गोविन्द भाई, सुधा बहन, मधु बहन, कुसुम बहन, भारती बहन, जगदीश भाई दोशी, कीकुभाई, न्यूयोर्क के-डॉ. विष्णु भाई, लोपा बहन, सुरेश भाई, सतीष भाई पटेल, प्रवीण भाई सोलंकी, रजनी भाई पटेल, जीतु भाई कोठारी, फिला के-सूर्यकांतभाई, दिलीप भाई, भरत भाई, हर्षद भाई, कांती भाई, जयंती भाई, हर्षदा बहन, सुरेश भाई, प्रमीला बहन; लॉस एन्जल्स के-शरद भाई दोषी, ऊषा बहन कापडिया, जीतु भाई, हरसुख भाई, डॉ. प्रवीण भाई; सान्फ्रान्सीस्को के-अरविन्द भाई, नरेन्द्र भाई, विष्णु भाई, विमला बहन; डेनवर के-इन्दु भाई; डीमोइस के-प्रदीप भाई त्रिवेदी; डेट्रोईट के–भानुप्रसाद भाई, विष्णु भाई, प्रफुल्ला बहन; टोरेन्टो के-चन्द्रकांत भाई पटेल, प्रफुल्ल भाई, नवनीत भाई, गीता बहन आदि को। वहां 'योगी डिवाईन सोसाईटी' के अध्यक्ष है श्री दिनकर भाई जिन्होंने इस यात्रा में प.पू. काकाजी को अनेक सुविधा प्रदान करके इनका प्रवास अत्यंत सरल बनाया है. उपाध्यक्ष है श्री महेन्द्रभाई, सचिव, श्री सुरेश भाई शाह और कोषाध्यक्ष है श्रीमती सुधा बहन पटेल।

इस प्रकार विदेश में प.पू. काकाजी का धर्मचक्र प्रवर्तन सतत चल रहा है। लगभग दो मास वे अमेरिका में रहे और उन्होंने करीब 20-22 हजार मील का प्रवास करके अठारह से अधिक भिन्न-भिन्न केन्द्रों में जाकर अपनी परावाणी से मुमुक्षुओं को लाभान्वित किया, उनके आवासों को तीर्थ बनाया, उनकी व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक समस्याओं को हल किया, अपनी दिव्य शक्ति का अनुभव करवा कर अपने स्वरूप में प.पू. योगीजी महाराज का दर्शन करवाया, संत और सत्संग की

गहरी समझ दी, परमात्मा के प्रति प्रेम जागृत करवाया और अनेक अमेरिकी प्रजाजनों को भी स्वामिनारायण महाप्रभु का परिचय देकर ता. 30वीं अगस्त को अमेरिका से लन्दन के लिये विदाई ली।

अब प.पू. काकाजी लन्दन के हरिभक्तों के प्रेमाग्रह के कारण ग्रेटब्रिटेन में है और वहां से यूरोप में जर्मनी आदि स्थलों एवं कुवैत होकर स्वदेश पदार्पण करेंगे।

बम्बई प.भ. श्री रमेशभाई सोनी पू. काकाजी के साथ यात्रा में विचरण कर रहे हैं। अतः इतनी लम्बी यात्रा में प.पू. काकाजी को हर प्रकार की सुविधा है और हम आश्वस्त है क्योंकि प्रेम भाव पूर्ण रमेशभाई **'योगः कर्मसु कौशलम्'** के अनुसार कर्मों में कुशल है इतना ही नहीं प्रगट के भजनों में वे स्वयं निरन्तर रत हैं और अन्यों को रत रखते हैं। परिणाम रूप उनका भी इस यात्रा में अपना विशिष्ट योगदान है।

श्री सहजानंदस्वामी की द्विजन्मशताब्दी आ रही है। आगे हम लिख चुके हैं कि यह पर्व केवल एक कालवधि का द्योतक नहीं है। सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण गुजरात के सीमा प्रान्त से विश्व व्याप्त होना चाहते हैं और सद्धर्म द्वारा महाद्वीपों के असंख्य लोगों का उद्धार करना चाहते है। एक चारों ओर आग फैल रही है, कहीं चैन नहीं है, तो दूसरी ओर प.पू. काकाजी द्वारा महाराज शामक चैतन्य का अमृत प्रस्रवण करके मोहग्रस्त जगत् को सजीवन कर रहे हैं। यह है श्रीजी महाराज की अपूर्व करुणा। ज्ञाति, जाति, देश, काल सबसे अतीत उनकी करुणा पल पल पर प्रत्यक्ष हो रही है। यह ही एक संजीवनी है। प.पू. काकाजी पत्र प्रसादी में वास्तविक सुगंध इस कस्तूरी की ही है- इस संजीवनी की ही है। यह हे महाराज की ही प्रसादी ! नायगरा के प्रपात के समान उर्ध्व अक्षरधाम से यह प्रपात सतत प्रवहमान है। हम नतमस्तक होकर उसे ग्रहण करें।

So Says Pujya Pappaji

1. Never, never forget even for a moment that. The Supreme, Omniscient, omnipotent, omnipresent Divine, has selected You to do His Work.
   Then why worry?
2. Be and remain true and sincere to the cause-the goal.
3. Always and every moment aspire and remain open for His help and guidance and then act freely and fearlessly.
4. Whatever need and necessary for His Service will and must be provided by Him. Have faith.
5. Always remain sportive, Keep spotsman spirit, maintain it and make it your habit. Hence Laugh out your difficulties & shortcomings and falls. Stand up and with double feal march on towards your goad.
6. Never accept even your criticisms in to. Scrutinize them, accept whatever necessary and then forget them, neglect them and continue your march with new zeal and gay.
7. Dont compare your progress with any body.
8. Don't criticize anybody. It's not your job.
9. What have we to lose when everything "called and labelled ours" has been burnt to ashes by us and seated on the throne of those ashes we have started on this Eternal march!
10. Be brave and keep Spiritual equanimity. Victory is definitely yours.

Regd. No. D (D) 655

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	15.9.79	शनिवार	श्रीजी महाराज और अ.म.मु. जागास्वामी का श्राद्ध
2. दि.	16.9.79	रविवार	ब्र.स्व. स्वामिश्री योगीजी महाराज का श्राद्ध; एकादशी
3. दि.	18.9.79	मंगलवार	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामीजी और अ.म.मू. भगतजी महाराज का श्राद्ध
4. दि.	22.9.79	शनिवार	नवरात्रारंभ
5. दि.	30.9.79	रविवार	नवमी, श्री हरिजयंती
6. दि.	1.10.79	सोमवार	विजयादशमी-दशहरा
7. दि.	2.10.79	मंगलवार	पाशाकुंशा एकादशी, व्रत
8. दि.	4.10.79	गुरुवार	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी का स्वधामगमन दिन
9. दि.	5.10.79	शुक्रवार	शरद्पूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी का प्राकट्यदिन और प.पू.प्र.ब्र.स्व. हरिप्रसाद स्वामिजी का दीक्षादिन
10. दि.	7.10.79	रविवार	अ.म.मु. जागास्वामी का प्राकट्यदिन
11. दि.	16.10.79	मंगलवार	रमा एकादशी, व्रत
12. दि.	18.10.79	गुरुवार	धनत्रयोदशी
13. दि.	19.10.79	शुक्रवार	कालीचौदश

साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदास जी द्वारा योगी डिवाईन सोसाईटी,
ए-103, अशोक विहार-III, दिल्ली-110052 फोनः 518838
मुद्रण स्थानः ठक्कर प्रिंटिंग प्रेस, 2588, बस्ती पंजाबियान, सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007